Quadrant II – Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts (Third Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HNC 108

Paper Title: स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्य

Unit: 1

Module Name: स्वातंत्र्योत्तर राजनैतिक परिवेश

Module No:

Name of the Presenter: Dr. Brijpal Singh Gahloth

Notes

स्वातंत्र्योत्तर राजनैतिक परिवेश

१९४७ में भारत स्वतंत्र हो गया किन्तु खंडित रूप में। पाकिस्तान का निर्माण हुआ। आरंभ में कुछ समय तक स्वतंत्र भारत की सरकार को शरणार्थियों के पुनर्वास और उनकी सुरक्षा की समस्या से उलझना पड़ा। भारत विभाजन के पूर्व और उसके बाद भी भयंकर सांप्रदायिक दंगे हुए, जिनमें लाखों लोग बेघरबार होकर भारत से पाकिस्तान गए और पाकिस्तान से भारत आए। भारत की सदियों पुरानी अखंड मूर्ति खंडित हुई। इसके साथ ही खंडित हुए हिन्दू मुस्लिमों के बीच का भाईचारा। हिन्दी प्रदेश को विभाजन का अनुभव दूर से ही हुआ, इसलिए विभाजन की ऐतिहासिक त्रासदी ने हिंदी साहित्य को अधिक प्रभावित नहीं किया।

भारत ने विकास के लिए मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया और समाजवाद को अपना लक्ष्य घोषित किया। अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारत ने निर्गुटता की नीति अपनाई ताकि शीत युद्ध से बच अपने विकास पर ध्यान केंद्रित कर सके। आम चुनावों और पंचवर्षीय योजनाओं ने स्वातंत्र्योत्तर भारतीय मानसिकता निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रूस की तर्ज पर पंचवर्षीय योजनाओं से देश में निर्माण कार्य आरंभ हुए। इस बीच सांप्रदायिकता से ग्रस्त एक आदमी ने महात्मा गांधीजी की हत्या कर दी। अंग्रेजों द्वारा निर्मित संवैधानिक व्यवस्था आरंभ हुई। बड़े नेता मंत्री पद पर विराजमान हो गए। योजनाओं के लिए बाहरी सहायता के रूप में जो धन आया, उसके वितरण में भाई – भतीजावाद, भ्रष्टाचार पनपा। फलत: कुछ क्षेत्र उन्नत हो गए और कुछ पिछड़ गए। उनमें परस्पर स्पर्धा का भाव पैदा हुआ जिसमें क्षेत्रीयता और भाषागत संकीर्णता की भावना बढ़ी। संविधान ने हिन्दी को संपर्क भाषा और राजभाषा के रूप में स्वीकार किया किन्तु अंग्रेजी का वर्चस्व बना ही रहा क्योंकि देश में बड़े पूँजीपतियों और विदेशों की बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अंग्रेजी में सुविधा थी। काले धन का विस्तार बहुत तेजी से हुआ।

इन सब बातों के कारण स्वाधीनता आंदोलन के सिद्धांत और आदर्श न केवल अप्रासंगिक हुए वरन् उनका दुरुपयोग भी होने लगा। कुल मिलाकर इन स्थितियों में अन्य परिस्थितियाँ भी ज़िम्मेदार रही। मोह भंग की मानसिकता का जन्म हुआ। आज़ादी को लेकर सामान्य आदमी ने जो सपने देखे थे, वे भंग हुए। इसलिए

अनिवार्यत: स्वतंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य मोहभंग का साहित्य है। केंद्रीय सरकार और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के बीच की टकराहट तथा तेलंगाना में सशस्त्र किसान विद्रोह इसी मोहभंग की अभिव्यक्ति रही।

यही मोहभंग १९७५ में राममनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में सक्रिय रूप धरता हुआ तथा 'दूसरी आज़ादी' के सशक्त आंदोलन के रूप में उभरता हुआ नज़र आया जिसको कुचलने के लिए ही देश में ७५-७७ के बीच आपातकाल की स्थितियाँ रही और राजनीतिक मोर्चे पर चुनाव में तत्कालीन सरकार को हार का सामना करना पड़ा। हालांकि इस लंबे स्वातंत्र्योत्तर काल में देश केवल नकारात्मक स्थितियों से ही गुजरता रहा, ऐसी बात नहीं है। हरित क्रांति, श्वेत क्रांति, उद्योगों का विकास, जमींदारी उन्मूलन, बँको का राष्ट्रीयकरण, शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में भारत ने बहुत विकास किया पर वह नाकाफ़ी साबित हुआ, गरीबी हमेशा हमारे लिए एक चुनौती ही बनी रही।

आगे चलकर नब्बे के दशक में भूमंडलीकरण पूरे विश्व में एक महा परिवर्तन लेकर उपस्थित हुआ। भारत में इसे क्रियान्वित करने का कार्य राव सरकार ने किया। अब पूरा विश्व एक मंडी में तबदील हो गया। कंपनियाँ अपना माल कही पर भी और किसी को भी बेच सकती थी। कट्टर राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय सीमाओं का महत्व कम हुआ, राष्ट्रीय नीतियों के केंद्र में राजनीति नहीं व्यापार स्थापित हुआ, देशों के पारस्परिक संबंध राजनीतिक कम व्यापारिक ज़्यादा हो गए। देशों के बीच परस्पर निर्भरता की भावना बढ़ी पर यह अवधारणा "वसुधैव कुटुंबकम्" की न होकर राष्ट्रीय स्वार्थ पर ही आधारित थी। भारत भी इससे अछूता नहीं रहा, भारत दुनिया के लिए एक बार फिर एक विशाल मंडी के रूप में उपस्थित हुआ जहाँ दुनिया के सभी ब्रांड बिकते हैं। आज भूमंडलीकरण के बाद की दुनिया सशस्त्र युद्धों से प्राप्त शक्ति की नहीं बल्कि व्यापारिक ताकत हासिल कर कमज़ोर देशों को अपना गुलाम बना लेने की दुनिया है जिसमें शस्त्रों का व्यापार भी शामिल है। इन चुनौतियों का सामना करते हुए भारत अपने सांस्कृतिक मूल्यों को सहेजने का प्रयास करते हुए अपनी भूमिका निभा रहा है।